ओ३म्

हवन हाजिर हो

(न्यायालयी शैली पर आधारित एक अद्भुत हवन नाटिका)

(यज्ञपद्धति सम्बन्धी विशेषताओं की अत्यन्त रोचक, सरस, नाट्यात्मक ढंग से प्रस्तुति)

लेखकः-
डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा
कुटी नं० 230, मुख्य शाखा
आर्य वानप्रस्थाश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार उत्तराखण्ड)

ओ३म्

हवन हाजिर हो (हवन नाटिका)

मंच सज्जा- न्यायालय का दृश्य, बीच में मुख्य न्यायाधीश
स्वामी भजनानन्द की कुर्सी के दोनों और दो-दो कटघरे।

नेपथ्य से-भाइयो और बहिनो ध्यान से सुनें। इस यज्ञ स्थली से अभी-अभी चार विभूतियाँ प्रकट हुई हैं। उन्होंने अव्यक्त से व्यक्त अर्थात् सूक्ष्म से स्थूल रूप धारण कर लिया है। उनके नाम हैं- संध्या, हवन प्रवचन और भजन। ये चारों मानवीय भाषा में किसी गम्भीर विषय पर बातचीत या बहस कर रहें है। मुख्य मुद्दा यह है कि चारों में सर्वश्रेष्ठ कौन है ? वैसे तो चारों श्रेष्ठ हैं। चारों मानव आस्था के केन्द्र हैं, आत्मा को परमात्मा को जोड़ने के सुदृढ़ सेतु हैं। फिर भी सर्वश्रेष्ठ तो कोई एक ही होगा और वही दूसरों का नेतृत्व भी करेगा।

संध्या, हवन और प्रवचन ने अपने सर्वश्रेष्ठ होने की दावेदारी ठोक दी है। भजन इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता। उसनें संन्यास ले लिया है ओर अपना नाम रखा है - स्वामी भजनानन्द।

इधर तीनों ने अपनी सर्व श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया है। स्वामी भजनानन्द ने इनके अनुरोध पर न्यायाधीश अर्थात् जज का पद स्वीकार कर लिया है। तो आइये, प्रथम बार मानवीय रूप में प्रकट हुए इन्न चारों की नोक-झोंक का आनन्द उठातें हैं।

न्यायाधीश स्वामी भजनानन्द अदालत के बीच अपनी कुर्सी पर आकर बैठ जाते हैं। मेज पर पड़े हुए कागजों को पलटते हुए, धीरे से बोलते हैं। आज की कार्यवाही शुरू की जाय।

(आवाज): वादी हवन हाजिर हो। प्रतिवादी संध्या ओर प्रवचन भी हाजिर हों (संध्या, हवन और प्रवचन तीनों कटघरे में आकर खड़े हो जाते हैं।)

भजनः क्या है तुंम्हारा केस ?

हवनः महोदय, हम तीनों में से मैंने नेतृत्व की भावना से अपने को सर्वश्रेष्ठ सावित करने का दावा किया हैं।

भजनः उसका आधार।

हवनः अपने गुण, अपनी विशेषतायें तथा नेतृत्व की क्षमता।

भजनः (संध्या और भजन से) और तुम दोनों ?

प्रवचनः जनाब, हम दोनों भी सर्वश्रेष्ठ कहलाने के दावेदार हैं।

भजनः पहले किसने अपनी दावेदारी पेश की ?

हवनः जी मैंने ?

भजनः पहले तुम्हें अपनी बात कहने का, अपनी विशेषताएँ प्रकट करने का मौका दिया

जायेगा। तुम अपने गवाह भी हाजिर कर सकते हो। (संध्या और प्रवचन से) तुम भी हवन से जिरह कर सकते हो, प्रश्न पूछ सकते हो। (फिर हवन से) हवन तुम्हारे लेट होने के कारण कोर्ट की कार्यवाही दस मिनट लेट शुरू हो रही है।

हवनः जनाब! मेरे आगे डटी हुई थी महारानी संध्या और पीछे अड़े हुए थे महाराज प्रवचन। न तो संध्या ने मुझे रास्ता दिया और न प्रवचन ने पीछे मुड़ने दिया। महोदय, क्या कभी संध्या से पहले मेरी बारी नहीं आ सकती?

भजनः तुम ये भूल जाते हो कि संध्या है ब्रह्म यज्ञ और तुम हो देवयज्ञ। ब्रह्म और देव के अन्तर को तुम जानते ही होगें?

संध्याः (चिढ़ाते हुए) सुना देवयज्ञ जी!

हवनः- हाँ ब्रह्म यज्ञ जी, सुन भी लिया और तुम्हारे व्यंग्य को भी समझ लिया।

प्रवचनः श्रीमन्, हवन हम पर झूठा आरोप लगा रहा है कि हमने उसका रास्ता रोका हुआ था। यह तो अपनी कमजोरी को छिपाने का बहाना था।

संध्याः असलियत यह है कि हवन महाराज रोज कई किलो सामग्री हजम कर जाते हैं और ढ़ेर सारा घी पी जाते हैं। कभी-कभी चावल और हलवे का स्वाद भी चख लेते है। इसी कारण इतने मोटे हो गए हैं कि इनसे चला भी नहीं जाता।

हवनः (संध्या की ओर संकेत करके) महोदय, अपने दुबले-पतले शरीर तथा मेरे स्वस्थ, सुन्दर शरीर को देखकर इन्हें ईर्ष्या हो रही है। अगर मैं ज्यादा खाता हूँ तो लोक कल्याण के काम भी तो ज्यादा करता हूँ।

भजनः हवन सुनो! बिना गवाह या प्रमाण के कोई बात मत कहो। यदि लोक कल्याण के काम करते हो तो गवाह हाजिर करो।

हवनः जी जनाब! मैं गवाह के रूप में श्रीमदभगवत् गीता को हाजिर करने की अनुमति चाहता हूँ।

भजनः अनुमति दी जाती है।

भगवत् गीताः (हाजिर होकर) मैं हाजिर हूँ महोदय।

भजनः गीता जी, क्या जानती है, आप हवन के बारे में?

भगवत् गीताः महोदय, वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि अनेक ग्रन्थों में हवन की महिमा गाई हैं। मैं भी यह बात सगर्व कह सकती हूँ कि कोई भाग्यवान् व्यक्ति ही हवन या यज्ञ करने का सौभाग्य प्राप्त करता है। यज्ञ ही सृष्टि या नाभि अर्थात् मूल केन्द्र है। आपने वह श्लोक तो सुना ही होगा-

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्म समुद्भवः।।

अर्थात् प्राणिमात्र अन्न से जीवित रहता है। अन्न बादलों से तथा बादल यज्ञ से उत्पन्न होते हैं और श्रेष्ठ कर्म करने वाला ही यज्ञ करने का अधिकारी बन पाता है।

भजनः अब आप प्रस्थान कर सकती है। (भगवत् गीता का प्रस्थान)

प्रवचनः मान्यवर, भगवत् गीता जी ने संकेत किया कि वेदों में हवन या यज्ञ का वर्णन हुआ है। पर हमारे हवन महाराज को अपने बारे में पता ही नहीं, दूसरे बता रहे हैं। यदि इन्हें पता होता तो सबसे पहले गवाह के रूप में वेदों को आमंत्रित करते।

हवनः यह झूठा आरोप है श्रीमन्! मैंने सोचा कि इतने छोटे से कार्य के लिए वेदों को क्यों आमंत्रित किया जाय। लेकिन यदि मेरे प्रतिवादी को सन्देह हैं तो मैं किसी वेद को आमंत्रित करने की अनुमति चाहता हूँ।

भजनः यदि तुम ऐसा कर सके तो मुझे प्रसन्नता होगी।

(आवाज) ईश्वरीय वाणी यजुर्वेद हमारी प्रार्थना पर हाजिर हों।

यजुर्वेदः (प्रकट होकर) हमें क्यों पुकारा वत्स!

भजनः (मस्तक झुकाते हुए) मैं आपको प्रणाम करता हूँ। भगवन्, हवन आपको गवाह के रूप में प्रकट होने की प्रार्थना कर रहा था।

यजुर्वेदः कैसी गवाही।

हवनः भगवन! मेरा अस्तित्व खतरे में है। संध्या और हवन अपने को सर्वश्रेष्ठ घोषित करना चाहते हैं।

यजुर्वेदः ये कैसी नादानी है। पर तुम मुझसे क्या चाहते हो।

हवनः अपनी सर्वश्रेष्ठता का प्रमाण।

यजुर्वेदः तो तुमने अपने स्वार्थ के लिए मुझे बुलाया है पर मेरे लिए तो सभी बराबर हैं। फिर भी इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि वेद मंत्रों में अनेक स्थलों पर हवन या यज्ञ की चर्चा हुई है।

हवनः (प्रसन्न होकर) वहीं तो मैं चाहता हूँ।

यजुर्वेदः इसके लिए मेरे मंत्रों को देखो।

संध्याः मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि हवन को वे मंत्र न बतायें।

प्रवचनः यदि बताना ही है तो मेरी विशेषताएँ बता दें।

यजुर्वेदः यह तो बहुत बड़ा धर्म संकट है। एक कहता है बता दें, दूसरा कहता है न बताएं। चलो मैं बताता हूं और नहीं भी बताता। बस एक ही मंत्र की कुछ पंक्तियाँ गुनगुना देता हूँ -

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्, प्राणो यज्ञेन कल्पताम्, श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम् आदि।

हवनः (प्रसन्न होकर) बहुत-बहुत धन्यवाद(भजन से) महोदय, नोट किया जाए, इन मन्त्र पंक्तियों में यज्ञ की महिमा का ही बखान किया गया है।

प्रवचनः हवन, तुम्हारी गवाही देने में वेद और गीता तो आ गये लेकिन लगता है उपनिषद् बन्धुओं के आगे तुम्हारी दाल नहीं गली। कोई भी तो नहीं आया गवाही देने।

हवनः वे आलोचकों से दूर ही रहते हैं। जहाँ सुवचन सुनने को न मिले, वे वहाँ नहीं जाते।

प्रवचनः मैं प्रवचन हूँ, अतः सुवचन ही बोलूँगा। बुलाइये किसी उपनिषद् को।

हवनः (भजन से) महोदय, अनुमति मिले तो मैं गवाह के रूप मुंडक उपनिषद् को कटघरे मे बुलाना चाहूँगा।

भजनः आज्ञा है।

(आवाज): मुंडक उपनिषद् हाजिर हो।

मुंडकः (कटघरे में आकर) महोदय मैं हाजिर हूँ।

भजनः क्या तुम ऐसा मंत्र बता सकते हो कि यज्ञ करने वाला ईश्वर को प्राप्तकर सकता है।

मुंडकः क्यों नहीं, मान्यवर, मेरे ही दूसरे खण्ड के पाँचवें मंत्र में कहा गया है कि जो व्यक्ति यज्ञ में ठीक समय पर आहुति देता है उसको ये अग्नि शिखायें सूर्य की किरणें बनकर परमदेव के पास पहुंचाने में सहायक होती हैं --

तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो, यत्र देवानांपतिरेकोऽधिवासः।

प्रवचनः जनाब, मैं मुंडक से कुछ पूछने की अनुमति चाहता हूँ।

भजनः अनुमति है।

प्रवचनः (मुंडक से) आपका नाम मुंडक क्यो पड़ा ?

मुंडकः काम की बात पूछिए, बेकार की नहीं। न्यायाधीश बनने की कोशिश मत कीजिए।

प्रवचनः अरे बाबा! गलत आदमी से पाला-पड़ गया। (नम्र होकर) मुंडक जी, अभी आपने कहा था कि यज्ञ में आहुति देने वाले व्यक्ति को अग्नि की शिखायें सूर्य की किरणें बनकर परम देव के पास ले जाती हैं। वहीं दूसरे खण्ड के ही सातवें मंत्र में कहा गया है कि 'प्लवा ह्येते अदृढ़ा यज्ञ रूपा' अर्थात् यज्ञ रूपी नौकायें संसार रूपी सागर को पार करने में कमजोर है ? क्या कहना चाहेंगे, आप इस बारे में ?

मुंडकः सुनिये, कुवचन जी,

प्रवचनः (चिढ़ कर) कुवचन जी नहीं, प्रवचन जी कहिए।

मुंडकः ठीक है, प्रवचन जी, यह यज्ञ रूपी नौका उन्हीं के लिए कमजोर कही गई है जो केवल यज्ञीय बाहरी कर्मकाण्ड को ही महत्त्व देते हैं लेकिन जो यज्ञ के साथ ईश्वरीय भक्ति; आस्था और समर्पण से जुड़े रहते हैं वे निःसन्देह परम सत्ता तक पहुँच जाते हैं।

भजनः (मुंडक से) अब आप जा सकते हैं। (मुंडक का प्रस्थान)। (हवन से) सुनो हवन! अब किसी गवाह को बुलाने के बजाय अपना केस खुद लड़ो। अपनी विशेषतायें खुद प्रकट करो।

हवनः जैसी आपकी आज्ञा, महोदय, मेरे विभिन्न नाम हैं। जैसे-देवयज्ञ, हवन,अग्निहोत्र, यज्ञ आदि। मैं किसी भी नाम से विशेषताएँ प्रकट कर सकता हूँ।

संध्याः सुनो हवन, तुम अपना एक नाम और रख लो।

हवनः क्या ?

संध्याः महापेटू। तुम्हारी पाचन शक्ति गजब की है। सारा खाया-पिया हजम।
(सब हँस पड़ते हैं)

हवनः (रूष्ट होकर) तुम क्या खाती-पीती हो ? सिर्फ आचमन के तीन घूंट, और कभी तो वही भी नही। तभी तो ये हालत बनाई हुई है।

संध्याः क्या मतलब !

हवनः पाँच-सात मिनट में ही थककर चकनाचूर। कितना समय लगता है संध्या करने में।

भजनः शान्त, शान्त, तुम तो व्यक्तिगत झगड़ों में उलझ गये

हवनः क्षमा करें श्रीमन! मैं अपने मूल विषय पर आता हूँ। मेरा एक नाम यज्ञ भी है और यज्ञ का अर्थ है - देवपूजा, संगतिकरण और दान।

संध्याः (कटाक्षपूर्वक) कौन से देव की पूजा, शिवजी, गणेश जी या हनुमान जी ?

हवनः (अनसुनी करके) महोदय, पृथ्वी , जल, अग्नि, वायु, आदित्य सभी को देव कहा गया है क्योंकि ये प्रणिमात्र को निरन्तर देते रहते हैं। विद्वानों को भी देव कहा गया है -देवाः विद्वान्सः।

प्रवचनः यदि यज्ञ न किया जाय तो कौन सा फर्क पड़ जाएगा। क्या सृष्टि पलट जायेगी ?

हवनः सृष्टि पलटे या न पलटे, पर तुम्हारी बुद्धि अवश्य पलट गई है। क्या तुमने नहीं सुना -'यज्ञे नष्टे देवनाशः ततः सर्वं प्रणश्यति।' इसका अभिप्राय यह है कि यज्ञ के नष्ट होने से देवदृष्टि अर्थात् पृथ्वी,जल, तेज, वायु आदि सभी नष्ट हो जाएंगे। फिर क्या बचेगा ? इसीलिए मैं जोरदार शब्दों में कहना चाहता हूँ- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' अर्थात् यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है और 'सर्वं यज्ञे प्रतिष्ठतम्'सब कुछ यज्ञ पर ही टिका हुआ है।

संध्याः तुम बार-बार सृष्टि नाश की रट लगाए हुए हो, पर यह कैसे संभव हो सकता है ?

हवनः यज्ञ के न होने से अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जलप्लावन, सूखा, बीमारी, आदि विभिन्न रूपों में विपत्तियाँ आ धमकेंगी। जैसे तुम आ धमके हो।

संध्याः (क्रुद्ध होकर) देख लीजिए, महाराज! हवन हमें विपत्ति वता रहा है।

प्रवचनः (हाथ हिलाक़र भजन से) समझा दीजिए हवन को, ज्यादा धुँआ न छोड़े।

भजनः शान्त, शान्त। हवन, तुम कटाक्ष करने में अपनी ऊर्जा का दुरूपयोग मत करो।

हवनः जो आज्ञा। महोदय, दुःख तब होता है जब प्रवचन, प्रवचन देने के बजाय कठोर वचन बोलने लगता है। फिर भी आपकी आज्ञा का पालन करुँगा। मान्यवर, शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को देवताओं का अन्न कहा गया है -यज्ञों वै देवानामन्नम्। गीता में भी कहा गया है कि तुम यज्ञ के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करो। वे भी वर्षा,अन्नादि के द्वारा तुम्हें प्रसन्न करेंगे।

संध्याः हवन, तुम हमें बहका तो नहीं रहे हो। यज्ञ से वर्षा, असम्भव ! आखिर यज्ञ ऐसा कौन सा मंत्र फूँक देता है कि झमाझम वर्षा हो जाय।

भजनः (हवन से) दे पाओगे, इसका जवाब !

हवनः देता हूँ जनाब । संध्या देवी जी, कान खोलकर सुन लीजिए। यह तो आप भी मानती हैं कि अग्नि में साकल्य डालने से धुँआ पैदा होता है वह धुँआ साकल्य (सामग्री आदि पदार्थ) के स्थूल रूप को यहीं छोड़कर उसके सूक्ष्म रूप या तत्त्व को भाप बनाकर आकाश में ले जाता है। ये तत्त्व वायु के सम्पर्क से और ऊपर उठते हैं। उनमें जो पृथ्वी तत्व के कण हैं वे वायुमण्डल में फैल जाते हैं। उन्हीं पर बादल जमते हैं। और ठंड पाकर बरस जाते हैं।

संध्याः हवन महाराज! हवा में बातें मत कीजिए। शास्त्रों के प्रमाण दीजिए।

हवनः प्रमाण ही तो दे रहा हूँ। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है –''अग्नेर्वै धूमो जायते, धूमादभ्रमभ्राद वृष्टिरग्नेर्वा। एताः जायन्ते तस्मादाह तपोजा इति।''

प्रवचनः हमें भी इतनी संस्कृत तो नहीं आती। पर तुम से एक बात पूछना चाहता हूँ नाराज तो नहीं होगे ?

हवनः पूछो, पर तुम पूछते ही नाराज करने के लिए हो।

प्रवचनः मैं पूछना चाहता हूँ कि आहुति अग्नि में ही क्यों दी जाती है ? जल, वायु, पृथ्वी या आकाश में क्यों नहीं दी जाती ?

हवनः प्रवचन भाई, मैं भी तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। नाराज तो नहीं होगे ?

भजनः पूछो ! तुम भी कहाँ चूकने वाले हो।

हवनः तुम भोजन मुंह में ही क्यों डालते हो, नाक, कान या आँख में क्यों नहीं डालते ?

प्रवचनः (खीझकर) तुम मेरी मजाक उड़ा रहे हो। आखिर तुम यह बात पूछ कर क्या सिद्ध करना चाहते हो ?

हवनः मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति या वस्तु के लिए अलग-अलग नियम या व्यवस्था होती है।

जिस प्रकार भोजन मुँह में ही डाला जाता है और वह रूधिर, मांस, मज्जा अस्थि आदि के रूप में परिवर्तित हो जाता है। उसी प्रकार यज्ञाग्नि में जो साकल्य डाला जाता है, अग्नि उसको सूक्ष्म करके अन्तरिक्ष या सूर्य मण्डल में ले जाती हैं और उससे वृष्टि, पर्यावरण शुद्धि, पुण्य-प्राप्ति आदि अनेक लाभ होते हैं। दूसरी ओर यदि वह आहुति जल, पृथ्वी या वायु में दी जाये तो गल जायेगी, सड़ जायेगी या उड़ जायेगी।

भजनः वाह कमाल का जवाब दिया है तुमने।

संध्याः महोदय, आप किसी भी प्रशंसा करने से दूर ही रहें। आपको पता ही होगा कि इस समय आप किसकी भूमिका निभा रहे हैं ?

भजन : हाँ, मैं इस समय न्यायाधीश की भूमिका निभा रहा हूँ। पर कभी मेरा भी तो जी चाहता हूँ कि मै कुछ बोलूँ।

प्रवचनः जनाब, आपको बोलना ही है तो मेरी प्रशंसा में बोलिए। मैंने कब रोका है आपको।

भजनः (अनसुना करके) हवन, अपनी बात जारी रखो।

हवन : मैं यज्ञ के बारे में बता रहा था कि इससे पर्यावरण की शुद्धि तो होती ही है साथ ही अनेक प्रकार की व्याधियों का समूल नाश हो जाता है। राज क्षमा (टी०बी०) जैसी बीमारियाँ यज्ञ में डाली गई औषधी एवं वनस्पतियों से युक्त आहुतियों से समूल नष्ट हो जाती है।

भजनः हवन ! मेरे मन में जिज्ञासा है कि क्या यज्ञ में आहुति देना ही पर्याप्त नहीं है, मंत्रोच्चारण क्यों किया जाए ?

हवनः यही प्रश्न यज्ञ की मूल भावना से जुड़ा हुआ है, महोदय! मंत्रोच्चारण करते समय वर्ण एवं ध्वनि वातावरण में एक विशिष्ट कम्पन का निर्माण करते हैं। उस विशिष्ट कम्पन से एक प्रकार की आलौकिक शक्ति का जन्म होता है और सारे विश्व का निर्माण इस कम्पन रूप शक्ति से हुआ है, ऐसा अणु वैज्ञानिक मानते हैं। इस कम्पन की मन्द या तीव्र गति के अनुसार वायु, तेज, जल, पृथ्वी का निर्माण होता है।

प्रवचनः अपनी बात को सरल ढंग से उदाहरण देकर प्रस्तुत करो, हवन!

हवनः उदाहरण भी दे रहा हूँ। इन कम्पनों का एक रूप वर्ण या ध्वनि है और दूसरा रूप प्रकाशमयी किरणें हैं। प्रातः काल होने पर सूर्य की किरणों से जो प्रकाश होता है उसके ध्वनि रूप प्रातः काल के मंत्र 'ओ३म् सूर्यो ज्योतिः ज्योति स्वाहा' आदि मंत्र हैं तथा अस्त होते हुए सूर्य के प्रकाश का ध्वनि रूप सांय कालीन मंत्र 'ओ३म् अग्नि ज्योति ज्योतिरग्नि स्वाहा' आदि मंत्र है।

संध्याः तुम्हारे पांडित्य की तो प्रशंसा करनी पड़ेगी। क्या तुम मंत्र शक्ति के बारे में और कुछ बता सकते हो ?

हवनः मंत्र शक्ति से सूक्ष्म से स्थूल को तथा स्थूल से सूक्ष्म को प्राप्त कर सकते हैं। जब हम मंत्र बोलते हैं तो वाक् तरगें पहले कान और फिर हृदय को स्पर्श करती है। ये तरंगे ब्रह्माण्ड को भी प्रभावित करती हैं। अतः मंत्र को यज्ञ की आत्मा कहा जा सकता है।

संध्याः प्रवचन, तुम हवन से प्रश्न ही करते रहोगे या कभी प्रशंसा के दो शब्द भी कहोगे ?

हवनः प्रशंसा करने से इन्हें बुखार आ जाता है। प्रशंसा की तो इनका केस कमजोर नहीं हो जायेगा, क्यों ठीक कह रहा हूँ न, प्रवचन भाई ?

प्रवचनः तुम्हारी बात में कुछ सच्चाई हैं हृदय से तो प्रशंसा निकलती है परन्तु होठों तक आते-आते न जाने कहाँ गायब हो जाती हैं।

हवनः खैर छोड़िये भी, पूछिये क्या पूछना हैं ?

प्रवचनः क्या तुम्हारे पास इस बात का वैदिक प्रमाण है कि अग्नि होत्र में आहुति देते हुए मंत्र बोलना आवश्यक हैं ?

संध्याः (हँसते हुए) अब फँसे हवन महाराज!

हवनः हवन तो दुनिया में फँसे हुए को परलोक की राह दिखाता है और तुम हवन को फँसाना चाहते हो। तुमने पूछा था कि आहुति देते समय मंत्र बोलना आवश्यक है तो इसका वैदिक प्रमाण दो। लो मैं देता हूँ। यजुर्वेद में कहा गया है कि- 'अक्रन कर्म कर्म कृतः सहवाचा मयोभुवा' अर्थात् अग्नि होत्र करते हुए मंत्रों का प्रयोग करना चाहिए। मंत्रोच्चारण से मन अत्यन्त प्रसन्न, उत्साहित एवं आस्थावान् हो जाता है। वैसे भी वेदमंत्र ईश्वरीय वाणी हैं और जब ईश्वरीय वाणी मानव देह में ध्वनियों के द्वारा प्रकट होगी तो किसे प्रसन्नता नहीं होगी ? मंत्र के माध्यम से हमारी कामनाये ईश्वर तक पहुँचती हैं।

संध्याः (प्रवचन से) सुनो प्रवचन, हम दोनों ने हवन पर प्रश्नों के न जाने कितने तीर छोड़े हैं और उसने हर तीर का सटीक जवाब दिया है। इस सृष्टि से तो हम सर्वश्रेष्ठ कहलाने के सपने भी नहीं देख सकते।

प्रवचनः यह तो मैं भी सोच रहा हूँ। मेरे तो सारे सपने चकनाचूर हो जायेंगे।

संध्याः नीति यह कहती है कि जब प्रतिपक्षी पर एक दिशा से प्रहार करने में सफलता प्राप्त न हो रही हो तो दूसरी दिशा से प्रहार करना चाहिए।

प्रवचनः बात को अधिक स्पष्ट करो।

संध्याः अरे भाई अब तक हम हवन से उसकी विशेषताओं पर ही प्रश्न कर रहें हैं। क्यों न हम अब यज्ञ की विधि या प्रक्रिया पर प्रश्न करें। हो सकता है, हवन चारों खाने चित्त हो जाये।

भजनः (हवन से) हवन ! सावधान। तुम पर दूसरी दिशा से प्रहार होने जा रहा है।

प्रवचनः (भजन से) जनाब, आप किसकी तरफ हैं, हमारी तरफ या हवन की तरफ ?

भजनः दोनों तरफ।

संध्याः पर आपने तो हवन को सचेत किया है।

भजनः अगर हवन भी गुप्त मंत्रणा करेगा तो तुम्हें भी सचेत करूँगा। खैर, अब तुम प्रश्न करो, तर्क-वितर्क नहीं।

संध्याः जी, (हवन से) यज्ञ करने से पहले क्या किया जाता है ?

हवनः दीपक प्रज्वलित किया जाता है।

संध्याः क्यों ?

हवनः यह दीप ज्योति ही अग्नि का मूल आधार है। 'ओ3म्' अर्थात् ईश्वर ही ज्योति स्वरूप दीप में प्रकट होकर बाद में विराट बनकर 'भूः' अर्थात पृथ्वी लोक, 'भुवः' अर्थात् अन्तरिक्ष लोक तथा 'स्वः' अर्थात् द्युलोक का रक्षण करता है।

इसीलिए 'ओ३म् भूर्भुवः स्वः' बोलकर दीपक प्रज्वलित किया जाता है।

प्रवचनः फिर क्या करते हैं ?

हवनः उस दीप ज्योति से कपूर प्रज्वलित करके 'ओ३म् भूर्भुवः स्वः द्यौरिव भूम्ना'। आदि मंत्र बोलते हुए उस जलते हुए कपूर को हवन कुंड के मध्य स्थापित करते हैं और भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि यह यज्ञाग्नि हमारे इष्ट अर्थात् कामनाओं को पूर्ण करने वाली हो।

संध्याः आपने मंत्र का शुभारम्भ 'ओ३म्' से किया है क्या प्रत्येक मंत्र के प्रारम्भ मे 'ओ३म्' बोलना आवश्यक है ?

हवनः हाँ, ईश्वर के जितने भी नाम हैं उनमें 'ओ३म्' नाम ही सर्वश्रेष्ठ है। इसके उच्चारण मात्र से ही शरीर और मन में तरंगें, अलौकिक आनन्द, उत्साह, आस्था, भक्ति आदि गुणों का समावेश हो जाता है। प्रारम्भ में 'ओ३म्' के उच्चारण से मंत्रों की शक्ति भी बढ़ जाती है जैसे सेनापति के आगे-आगे चलने से सैनिकों की। प्रारम्भ में 'ओ३म्' बोलने से समस्त मंत्र 'ओ३म्' के ही वाचक हो जाते हैं। 'ओ३म्' के कारण मंत्रों का प्रभाव और महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

भजनः (हवन से) हवन, मैं भी तुमसे जिज्ञासावश एक प्रश्न करना चाहता हूँ।

भजनः जनाब, आप हमारी तरफ से प्रश्न कीजिए और ऐसा प्रश्न कीजिए कि हवन बगलें झांकने लगे।

भजनः ऐसी सोच और प्रवृत्ति के कारण ही तुम्हें सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। (हवन से) मैंने देखा है कि अन्याधान के बाद घृत में डुबोकर तीन समिधायें मंत्र बोलकर बारी-बारी से हवन कुण्ड में डाली जाती हैं। ऐसा क्यों और तीन ही क्यों ?

हवनः मान्यवर, तीन लोकों में तीन प्रकार की अग्नियाँ मानी जाती हैं। पृथ्वी लोक की अग्नि को 'पवमान', अन्तरिक्ष लोक की अग्नि को 'पावक' तथा द्युलोक की अग्नि को शुचि कहते हैं। अतः एक-एक लोक की अग्नि के लिए एक एक समिधा की आहुति दी जाती है।

संध्याः आश्चर्य ! यह तो पहली बार पता चला।

प्रवचनः (संध्या से) तुम भी पगली हो। सामने प्रशंसा नहीं किया करते।

संध्याः क्यों ?

प्रवचनः क्या तुम नहीं जीतना चाहती ?

संध्याः ओ अच्छा ! मैं तो भूल ही गई थी कि हम हवन को पराजित करना चाहते हैं। तो लो मैं ऐसे प्रश्न का शर संधान करती हूँ कि हवन महाराज विवेक शून्य हो जायेंगे। (हवन से) हवन महाराज! जो समिधायें अग्नि में डाली जाती हैं, उनका निश्चित परिणाम या आकार तो होगा ही। और इसके पीछे कोई प्रमुख कारण अवश्य होगा।

हवनः हाँ, तीनों समिधायें आठ-आठ अंगुल परिणाम की होती हैं, जैसे गायत्री मंत्र का

एक-एक पाद आठ-आठ अक्षरों का होता है। गायत्री के तीन पादों की अक्षर संख्या का जोड़ चौबीस होगा। उसी प्रकार तीन समिधायें भी चौबीस अंगुल परिमाण की हुई, यही प्रमुख कारण है।

प्रवचनः प्रवचन(दुःखी होकर) तुम महिलाओं से कुछ नहीं होगा। पुरुष ही पुरुष को पराजित कर सकता है। अब देखो, मेरा पराक्रम(हवन से)।

बाकी मंत्र तो प्रायः एक-दो बार ही बोले जाते हैं, पर 'अत्यन्त इध्म आत्मा....' आदि एक ही मंत्र को पाँच बार क्यों बोला जाता है ?

हवनः यदि तुम्हें पाँच रोटियों की भूख लगी हो और खाने के लिए केवल तीन रोटियां दी जाय तो तुम्हें कैसा लगेगा ?

प्रवचनः बुरा लगेगा।

हवनः ठीक इसी प्रकार इस मंत्र में ईश्वर से पाँच वस्तुओं की कामना की गई है। अतः मंत्र को भी पाँच बार दुहराया गया है। अर्थात् एक-एक वस्तु की कामना के लिए एक ही मंत्र की पाँच बार आवृत्ति।

संध्याः वे वस्तुएँ कौन सी हैं ?

हवनः मंत्र में स्वयं संकेत किया गया है। वे पाँच वस्तुएं इस प्रकार हैं-

प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस, अन्न और समेधय। अर्थात् सन्तान आदि का सुख, गाय-[illegible] आदि पशु, ब्रह्मसम्बन्धी आध्यात्मिक ऊर्जा, गेहूँ-चावल आदि अन्न तथा तप-त्यागपूर्वक रहने ही बुद्धि।

भजनः इस मंत्र के बाद यज्ञवेदी के चारों तरफ जल प्रसेचन किया जाता है इसका भी कोई खास कारण होगा।

हवनः हाँ, महोदय। यह तो सबको पता है कि यज्ञवेदी में अग्नि प्रज्वलित होने के कारण ताप का आधिक्य तो होगा ही लेकिन उसके चारों ओर वायुमण्डल की परिधि के बाहर अपेक्षाकृत अधिक आर्द्रता होगी। अतः ताप के चारों ओर की आर्द्रता की सूचक है -जल प्रसेचन प्रक्रिया। दूसरे शब्दों में ताप और आर्द्रता का समन्वय। अधिक ताप को रोकने के लिए आर्द्रता का प्रयत्न अग्नि ज्वाला को मर्यादा में बाँधने का प्रयास।

जल प्रसेचन इस बात का भी प्रतीक है। यज्ञ करते हुए चींटी, कीड़े-मकोड़े आदि यज्ञवेदी के आस-पास न आ सकें, इसलिए भी जल प्रवाह किया जाता है।

संध्याः तुम तो ऐसे फटाफट जवाब दे रहे हो कि जैसे तुम्हें पूरा क्वशन पेपर ही लीक आउट हो गया हो।

हवनः जहाँ हवन होगा वहाँ मेधा अर्थात् उत्तम बुद्धि तो होगी ही।

संध्याः लो एक प्रश्न और पूछती हूँ। जल प्रसेचन के बाद 'ओउम् अग्नये स्वाहा' आदि मंत्रों के द्वारा आधार वाज्याहुतियाँ क्यों दी जाती हैं ?

हवनः देखिए पहले जल प्रसेचन किया गया। उसके बाद बोला गया- 'ओ3म् अग्नये स्वाहा' इस आहुति तथा जलीय संस्पर्श या आर्द्रता के कारण सौम्यता स्वरूप सोम की उत्पत्ति हुई। फिर 'सोमाय स्वाहा' कहकर सोम को आहुति दी गई। फिर अग्नि और सोम से विश्व कारण रूप प्रजापति शक्ति की उत्पत्ति हुई। फिर 'प्रजापतये स्वाहा' कह कर प्रजापति को आहुति दी गई और अन्त में प्रजापति से बल-पराक्रम, ऐश्वर्यमय लोकपालक इन्द्र प्रकट हुआ। अतः 'इन्द्राय स्वाहा' कह कर उसे भी आहुति दी गई।

प्रवचनः लगता है तुम्हारी विद्वत्ता के सामने हमारी दाल नहीं गलेगी। फिर भी हम अन्त तक हार नहीं मानेंगे। आप जवाब दीजिए। मंत्र तो मंत्र होते हैं चाहे कभी भी बोल लीजिए। फिर प्रातःकालीन मंत्र 'ओ3म् सूर्योज्योति ज्योति स्वाहा' तथा सायंकालीन मंत्र 'ओ3म्' अग्निर्ज्योतिरग्नि स्वाहा' की अलग-अलग व्यवस्था क्यों की गई ?

हवनः जैसे प्रवचन संध्या का स्थान नहीं ले सकता और संध्या प्रवचन का स्थान नहीं ले सकती उसी प्रकार कोई मंत्र एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकता। सुनिये ध्यानपूर्वक, यज्ञ पृथ्वी को ही नहीं अन्तरिक्ष को, भी क्रियाशील कर देता है। यह सूर्य मण्डल से भी सम्बन्ध स्थापित करता है। अतः अग्नि में दी गई आहुतियाँ सूर्य मण्डल तक पहुँचती हैं। इसी कारण प्रातः कालीन सूर्य के लिए 'ओ3म् सूर्योज्योति ज्योति स्वाहा' आदि मंत्रों के द्वारा विशेष आहुतियाँ दी जाती हैं।

संध्याः यही बात सायंकालीन मंत्रों पर घटित होती होगी।

हवनः हाँ, जब सूर्य सायंकाल के समय अस्त हो जाता है तो अपने प्रतिनिधि के रूप में अग्नि को छोड़ जाता है। हम अग्नि में सूर्य की सत्ता के दर्शन करते हैं। दिन में अग्नि सूर्य के तेज को स्वयं में समाहित कर लेती है और रात्रि में उसी तेज को ज्योति रूप में प्रकट कर देती है। इसी कारण सायंकाल 'अग्नि ज्योति ज्योतिरग्नि स्वाहा' आदि मंत्र बोलकर आहुति दी जाती है।

प्रवचनः जनाब, हमारी बुद्धि तो काम नही कर रही है। आप ही पूछ लीजिए हमारी तरफ से, जिससे हमारा फायदा हो सके। हमारा अभिप्राय तो आप समझ ही रहे होंगे।

भजनः हाँ, अच्छी तरह। वैसे भी तुम अब आखिरी लड़ाई लड़ रहे हो। मैं हवन से प्रश्न पूछूँगा जरूर, पर तुम्हारी तरफ से नहीं। (हवन से) हवन! एक मंत्र है - 'ओ3म् यदस्य कर्मणोअत्यरीरिचम्' इस मंत्र को 'स्विष्टकृत होमाहुति' कहा जाता है और इसमें चावल या मिष्ठान्न आदि की आहुति दी जाती है।यह विशिष्ट आहुति इसी मंत्र में ही क्यों देते हैं ?

हवनः महोदय, मनुष्य से महान से महान कार्य करते हुए भी जाने-अनजाने में कोई त्रुटि हो ही जाती है। इसी प्रकार यज्ञ करते हुए कहीं न कहीं कोई न कोई न्यूनता रही ही जाती है। इस मंत्र में भगवान से प्रार्थना की जाती है कि आप हमारे बारे में सब